श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥
जाके बल से गरिविर काँपै। रोग-दोष जाके नकिट न झाँपै ॥
अंजनी पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई ॥
दे बीरा रघुनाथ पठाए। लंका जारि सिया सुधि लाए ॥
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई ॥
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज सँवारे ॥
लक्ष्मण मूर्छति पड़े धरणी में । आनि सजीवन प्रान उबारे ॥
पैठि पाताल तोरि जम-कारे। अहरिावन की भुजा उखारे ॥
बाएं भुजा असुर दल मारे। दहनि भुजा संतजन तारे ॥
सुर नर मुनि आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें ॥
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई ॥
जो हनुमानजी की आरति गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै ॥
लंक वधि्वंस कएि रघुराई । तुलसीदास स्वामी कीर्ति गाई ॥
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥